हमारे त्योहार

राजपाल एण्ड सन्ज़ दिल्ली

हमारे त्योहार

(भारत सरकार से पुरस्कृत)

धर्मपाल शास्त्री

राजपाल एण्ड सन्ज़, दिल्ली

सूची

हमारे त्योहार

कहते हैं, छः दिनों तक दुनिया रचकर सातवें दिन भगवान ने भी आराम किया था। फिर, हम तो हाड़-मांस के पुतले हैं। थकते भी हैं, ऊंघते भी हैं और उदास भी होते हैं। भला तेली के बैल की तरह दिन-रात कौन काम-धन्धे में जुता रह सकता है ? कभी आराम करने को भी जी चाहता है। कभी खुलकर हंसने-खेलने को भी मन करता है। उस दिन कोई हमसे पूछने वाला न हो कि आज काम क्यों नहीं किया। उलटा, उस दिन सब पूछें कि आज तो त्योहार का दिन है, आज भी काम में क्यों जुटे हुए हो ? आओ, मिलकर खुशियां मनाएं ! ऐसे दिन रोज़-रोज़ थोड़े ही आते हैं !

सचमुच, हमारे बाप-दादा कितने सयाने थे ! वे जानते थे कि हमारे लायक बेटे एक दिन भी अपने काम का हर्जा करने को तैयार न होंगे। इसलिए उन्होंने किसी न किसी बहाने से कुछ ऐसे दिन नियत कर दिए, जिन दिनों घर-घर और गांव-गांव में छुट्टी मनाई जाए। सब काम-काज बन्द रहें। उस दिन केवल एक ही काम किया जाए—नाचना-कूदना, हंसना-हंसाना, खाना-खिलाना, मिलना-मिलाना, सैर-सपाटे करना और जो जी में आए वही करना।

कहीं हमारे बेटे इन दिनों को समय गंवाना न समझने लगें, यह सोचकर पुरखाओं ने उनके साथ धर्म-कर्म का नाता या किसी महापुरुष का सम्बन्ध जोड़ दिया है और उनका नाम त्योहार रख दिया। जैसे, जिस दिन राम का जन्म

हुआ, उस दिन का नाम रामनवमी का त्योहार रख दिया; जिस दिन राम ने रावण पर विजय पाई, उस दिन का नाम दशहरा रख दिया और जिस दिन राम का राजतिलक हुआ, उस दिन का नाम दीपावली रख दिया। इस तरह सब त्योहार हंसी-खुशी के दिन होने के साथ-साथ पवित्र दिन भी माने गए। त्योहारों की छुट्टी मनाना उतना ही ज़रूरी हो गया जितना कि काम-धन्धा करना।

इसी तरह जब किसान फसलें बोते-बोते थक गए तो बुआई खतम होने के बहाने ही एक त्योहार रख दिया। फिर जब फसलों में फूल निकल आए तो इसी खुशी में दूसरा त्योहार रख दिया। अन्त में जब फसलें कटकर दाने घरों में आ गए तो इस आनन्द में तीसरा त्योहार रख दिया। मतलब यह कि हमारे पुरखाओं ने साल में दस-बारह छुट्टियां मनाने का कोई न कोई कारण ढूंढ़ ही निकाला। इन छुट्टियों से हमारे तन की थकान दूर होती है, हमारे मन की उदासी जाती रहती है और हम ताज़ादम होकर अपने कामों में फिर जुट जाते हैं।

•

नये साल का त्योहार :

बैसाखी

बैसाख की पहली तारीख को बैसाखी होती है। इस दिन हमारा नया साल शुरू होता है।

हम सुख में हों या दुख में, बैसाखी हर साल आती है। जब हम गुलाम थे तब भी बैसाखी आती थी। जब हम आज़ाद हुए तब भी बैसाखी आती है। हम उसका सन्देश सुनें या न सुनें; बैसाखी हर साल आती रही है, अब भी आया करती है और सदा आती रहेगी। वह आएगी और चली जाएगी। वह पुरानी होकर भी नई है।

जैसे वही का वही सूरज हर रोज़ निकलता है। फिर भी वह हर रोज़ नया होता है। चिड़ियां यह कहकर उदास नहीं होतीं कि यह कल का सूरज ही फिर आ गया है। हर रोज़ नये दिन का सन्देश लेकर आता है। हर रोज़ नई आशाएं लेकर आता है और हर रोज़ नया जीवन देकर जाता है। उसी तरह बैसाखी भी हज़ारों बरसों से चली आ रही है। वह हर साल आती है। वह कभी पुरानी नहीं होती क्योंकि वह नये साल का सन्देश लेकर आती है :

बीति ताहि बिसार दे आगे की सुधि लेय।

हमारे देश में पुराने समय से महीने चांद के हिसाब से गिने जाते हैं। बरस सूरज के हिसाब से गिने जाते हैं। सूरज के हिसाब से बरस का आरम्भ पहली बैसाखी को पड़ता है।

उस दिन रात के बारह बजे पुराना बरस विदा हो जाता है। सुबह नया एक बजता है। सुबह नई एक तारीख आती है। नया सूरज उगता है। नया इन्सान जागता है। नया जीवन आरम्भ होता है।

नये साल की खुशी में नदियों पर मेले लगते हैं। गंगा और यमुना में स्नान करके लोग शरीर के सब दुःख-सन्ताप उन्हींमें बहा देते हैं। मन के पापों को तीर्थों पर भुला देते हैं। वहां से नई उमंगें लेकर आते हैं। उस दिन लोग नये से नये कपड़े पहनते हैं।

मेले से बालक नये खिलौने और नई मिठाइयां लेकर लौटते हैं। कोई भी खाली हाथ नहीं लौटता। घर-घर में बधाइयां बंटती हैं। घर-घर में मंगल-गीत गाए जाते हैं। बरस का पहला दिन शुभ होगा तो सारा बरस शुभ बीतेगा—यह सोचकर हरएक हिन्दुस्तानी बैसाखी को पूरी सजधज से मनाता है। भगवान करे ऐसी बैसाखी हमेशा जीवन में आती रहे! हर-हर साल हम नये सिरे से नया जीवन शुरू करते रहें।

●

वन-महोत्सव

जुलाई के महीने में वन-महोत्सव ग्राता है। वन-महोत्सव एक कौमी त्योहार है। वह १ जुलाई से ७ जुलाई तक मनाया जाता है।

वन-महोत्सव के दिन पटाखे नहीं चलाए जाते। इस दिन झूले नहीं झूले जाते। इस दिन वन लगाए जाते हैं। इस दिन पेड़-पौधे बोए जाते हैं।

पेड़ लगाने को हमारे पुरखा पुण्य मानते थे। पेड़ ग्रौर बेटे में वे कोई भेद न समझते थे। बेटा बड़ा होकर केवल मां-बाप को सुख देता है। पेड़ बड़ा होकर दुनिया-भर को सुख देता है। बेटा बड़ा होकर दो हाथों की कमाई केवल ग्रपने मां-बाप को खिलाता है। पेड़ बड़ा होकर हज़ारों हाथों से दुनिया-भर के लिए फल लुटाता है। बेटे की छाया में केवल मां-बाप सहारा पाते हैं। पेड़ की छाया में हज़ारों मुसाफिर ग्राराम पाते हैं। हमारे पुरखाग्रों ने पेड़ लगाए थे। हम उन पेड़ों के फल खा रहे हैं। ग्रब हम जो पेड़ लगाएंगे, हमारी सन्तान उनके फल खाएगी। हम न रहेंगे तो भी पेड़ों के रूप में हमारी याद बनी रहेगी। जब तक पेड़ फलते रहेंगे तब तक हमारे पुण्य फलते रहेंगे। इसलिए हम एक पेड़ क्यों लगाएं ? हम भरपूर पेड़ लगाते हैं। हम एक दिन पेड़ क्यों लगाएं ? हम हर साल पेड़ लगाते हैं। हर साल जुलाई के महीने में हम वन-महोत्सव मनाते हैं।

एक पेड़ सूख सकता है। इसलिए हम पेड़ों का वन लगाते हैं। एक पेड़ एक ही जगह खड़ा रहता है। इसलिए हम जगह-जगह पेड़ लगाते हैं। एक ग्रादमी कुछ एक ही पेड़ लगा सकता है। इसलिए हममें से हरएक पेड़ लगाता है। एक-एक पेड़ लगाने से भी तीस करोड़ पेड़ लग जाते हैं। एक-एक पेड़ करके एक वन बन जाता है। इस तरह वन-महोत्सव मनाया जाता है।

बिना बेटे के मनुष्य का घर सूना रहता है। बिना पेड़ के मनुष्य की बस्ती सूनी रहती है। बिना बेटे के मनुष्य का कुल उजड़ जाता है। बिना पेड़ों के मनुष्य की बस्ती उजड़ जाती है। सयाने कहते हैं कि जब ज़ोर की बाढ़ आती है तो पेड़ों की जड़ें धरती को काटने से बचाती हैं। जब रेत की आंधियां चलती हैं तो पेड़ों की टहनियां धरती को रेगिस्तान होने से बचाती है। जब धरती प्यासी होती है तो पेड़ों की हरियाली बरसात को बुलाती है। पेड़ हमें ईंधन देते हैं। पेड़ हमें कोयला देते हैं। सचमुच पेड़ हमारा बड़ा उपकार करते हैं। इसीलिए हमारे पुरखा पेड़ों को देवता मानते थे। इसीलिए हमारे पिता पेड़ों की पूजा करते थे। इसीलिए हमारे महापुरुषों ने पेड़ लगाने को बड़ा पुण्य बताया है। इसीलिए पेड़ लगाने के लिए वन-महोत्सव मनाया जाता है।

चलो, वन-महोत्सव के दिन हम प्रतिज्ञा करें कि लोगों ने भूल से जो वन काट डाले हैं, हम उनसे भी सुन्दर वन लगाएंगे। जो धरती बंजर पड़ी है वहां कीकर लगाकर हम उसे भी उपजाऊ बनाएंगे। जहां रेगिस्तान बढ़ा चला आता है, वहां पेड़ लगाकर हम रेगिस्तान को बढ़ने से रोकेंगे।

हम मैदानों में पेड़ लगाएंगे। हम खाली और बंजर ज़मीन में पेड़ लगाएंगे। हम ढालदार भूमि में पेड़ लगाएंगे, जहां भूमि के कटने का डर है। हम तालाबों के किनारे, सड़कों के किनारे और नहरों के किनारे पेड़ लगाएंगे।

बस्ती में पेड़ लगाएंगे, जहां लोग रहते हैं। मन्दिरों में पेड़ लगाएंगे, जहां हम पूजा करने जाते हैं। पंचायतघरों में हम पेड़ लगाएंगे, जहां हम सब मिलकर बैठते हैं। शहर, गांव, स्कूल, अस्पताल, खेत, आंगन सब जगह हम पेड़ लगाएंगे।

पेड़ लगाकर हम अपने बेटे की तरह उनका पालन भी करेंगे।

●

राखी

एक बार राजा इन्द्र की राक्षसों से लड़ाई छिड़ गई। लड़ाई कई दिनों तक होती रही। न राक्षस हारने में आते थे, न इन्द्र जीतते दिखाई देते थे। इन्द्र बड़े सोच में पड़े। वे अपने गुरु बृहस्पति के पास आकर बोले---गुरुदेव ! इन राक्षसों से मैं न जीत सकता हूं, न हार सकता हूं। न मैं उनके सामने ठहर सकता हूं, न भाग सकता हूं। इसलिए मैं अन्तिम बार आपसे आसीस लेने आया हूं। अगर अब की बार भी मैं उन्हें जीत न सका तो युद्ध में लड़ते-लड़ते वहीं प्राण दे दूंगा।

उस समय इन्द्राणी भी पास ही बैठी थी। इन्द्र को घबराया हुआ देखकर वह बोली---पतिदेव ! मैं एक ऐसा उपाय करती हूं, जिससे आप इस बार अवश्य लड़ाई में जीतकर आएंगे।

इसके बाद इन्द्राणी ने गायत्री मन्त्र पढ़कर इन्द्र के दायें हाथ में एक डोरा बांध दिया और कहा—पतिदेव ! यह रक्षा का बन्धन मैं आपके हाथ में बांधती हूं। इस रक्षा-बन्धन को पहनकर आप एक बार फिर युद्ध में जाएं। इस बार अवश्य ही आपकी विजय होगी। इन्द्र अपनी पत्नी की बात गांठ बांधकर और रक्षा-बन्धन को हाथ में बंधवाकर चल पड़ा। इस बार लड़ाई के मैदान में इन्द्र को ऐसा लगा जैसे वह अकेला नहीं लड़ रहा—इन्द्राणी भी कदम से कदम मिलाकर उसके साथ लड़ रही है। उसे ऐसा लगा कि रक्षा-बन्धन का एक-एक तार ढाल बन गया है और शत्रुओं से उसकी रक्षा कर रहा है। इन्द्र दुगुने जोश से लड़ने लगा। इस बार सचमुच इन्द्र की विजय हुई।

तब से लेकर रक्षा-बंधन या राखी का त्योहार चल पड़ा। यह त्योहार सावन की पूर्णिमा को मनाया जाता है। इसलिए इसे सावनी या सलूनो भी कहते हैं।

राखी का सच्चा मतलब तो गुरुओं और ऋषि-मुनियों ने समझा।

सावन का महीना ऋषि-मुनि लोग गांवों और नगरों में बिताते थे। वे गांव-गांव में घूमते और नगर-नगर में लोगों को उपदेश देते थे। सावनी या सलूनो के दिन वे हरएक गांव में एक बड़ा यज्ञ रचाते। गांव-गांव और नगर-नगर के लोग गुरुमंत्र लेने के लिए उस यज्ञ में आते थे। ऋषि लोग उन्हें सच्चाई का उपदेश देते थे। भक्त लोग सच्चाई पर जमे रहने के वायदे करते थे। जिस तरह किसी बात को याद रखने के लिए आज भी कपड़े की गांठ लगा दी जाती है, उसी तरह वायदा याद रखने के लिए ऋषि लोग भक्तों के दायें हाथ में राखी की गांठ और गले में जनेऊ की गांठ बांध देते थे। इस गांठ को बांधकर भक्तों को ऐसा लगता था, मानो दुनियादारी के मैदान में वे अकेले ही पापों से नहीं जूझ रहे। उनके कदम से कदम मिलाकर उनके गुरु लोग भी उनके साथ-साथ लड़ रहे हैं। वे जनेऊ या राखी की गांठ की ओर इशारा करके कह रहे हैं—खबरदार! कहीं अपना वायदा न भूल जाना! तुमने सच्चाई पर जमे रहने का वायदा किया है! कहीं सच्चाई की राह से भटक न जाना!

इसीलिए आजकल भी सलूनो के दिन पुरोहित लोग अपने यजमानों के राखी बांधते हैं और पहले जनेऊ के बदले नया जनेऊ पहनाते हैं।

धीरे-धीरे राजपूतों ने भी राखी मनाना आरम्भ कर दिया, लेकिन राजपूती ढंग से। उनमें यह रिवाज हो गया कि यदि किसी औरत पर कोई मुसीबत आती थी तो वह किसी वीर पुरुष को अपना भाई कहकर उसे राखी भेज दिया करती थी। राखी का मतलब होता था, बहिन की रक्षा का सारा भार उठाना। चाहे कितना भी बलिदान क्यों न देना पड़े, वह वीर पुरुष अपनी मुंहबोली बहिन की हरदम रक्षा करने को चल पड़ता था। कहते हैं कि एक बार रानी कर्णवती ने बादशाह हुमायूं को इसी मकसद से राखी भेजी थी। वह मुसलमान था, फिर भी राखी का न्योता पाकर वह अपनी मुंहबोली बहिन की रक्षा के लिए तुरन्त चल पड़ा था। तब से बहिनें भी अपने भाइयों के हाथों में राखी बांधने लगी हैं।

आजकल राखी के दिन सुन्दर-सुन्दर राखियां बनाई जाती हैं। घरों में मीठे भोजन और पकवान बनाए जाते हैं। बहिनें भाइयों को राखी बांधती हैं। पुरोहित यजमान के हाथ में कंगना बांधता है।

राखी के इन सुनहरे डोरों के साथ जो गहरी बातें जुड़ी हुई हैं उन्हें हम भूलते जाते हैं। स्वर्ग में बैठे हमारे पुरखा हमारे इस भोलेपन पर हंसते होंगे। सलूनो के दिन हम सच्चाई पर डटे रहने का वायदा करना तो भूल गए हैं, केवल झूठे रेशम के तार पहनना हमें याद रह गया है।

•

कृष्ण-जन्म का त्योहार :

जन्माष्टमी

भारत में बस दो राजा हो गुज़रे हैं--एक राजा राम और दूसरे श्रीकृष्ण। आज इन दोनों का ही राज हमपर चला आता है। आज भी हम राजा राम की जय पुकारते हैं। आज भी हम श्रीकृष्ण की जय बुलाते हैं।

हमें ऐसा लगता है कि पल-भर के लिए भी श्रीकृष्ण हमसे अलग नहीं हुए। अब भी भादों का महीना आता है, हमें कंस का जेलखाना याद हो आता है। अंधियारी रात थी। मूसलाधार पानी बरस रहा था। बरसात की ठंडी हवाओं ने थपकी देकर जेल के पहरेदारों को नींद की गोद में सुला दिया था। तभी वसुदेव दबे पांव जेल से निकले। उनकी गोद में श्रीकृष्ण थे। वे जीवन की सारी पूंजी की तरह उन्हें छाती से चिपकाए थे। बालक कृष्ण को लेकर वे जमुना के पार उतरे। बालक को नन्द के हाथों सौंपकर उसकी कन्या को लिए वसुदेव वापस जेल पहुंचे। इस तरह कृष्णजी कंस के हाथों से बच निकले।

वह भादों का महीना था। अष्टमी की रात थी। उस रात को श्रीकृष्ण

का जन्म हुआ था। इसकी याद में हर साल कृष्ण-जन्माष्टमी मनाई जाती है।

कृष्ण-जन्माष्टमी के दिन गांव-गांव में कृष्ण-लीलाएं दिखाई जाती हैं। एक बड़ा जुलूस निकाला जाता है। जुलूस में आगे-आगे बाजा, बाजे के पीछे-पीछे झंडे, झंडों के पीछे-पीछे गानेवाले, गानेवालों के पीछे-पीछे बैल-गाड़ियां और बैलगाड़ियों पर कृष्ण के जीवन की झांकियां होती हैं।

झांकियों में कहीं कृष्ण और यशोदा दिखाए जाते हैं। कहीं कृष्ण और बलराम। कहीं कृष्ण और सुदामा। कहीं गौएं चराते हुए गोपाल। कहीं माखन खाते हुए मनमोहन। कहीं अर्जुन का रथ हांकते हुए मुरारी। कहीं गीता का उपदेश देते हुए घनश्याम।

जुलूस के बाद सारे गांव की ओर से एक बड़ा हवन किया जाता है। हवन के बाद गीता का उपदेश सुनाया जाता है। गीता के उपदेश के बाद श्रीकृष्ण के गुणों को याद किया जाता है। उनके गुणों की मोटी-मोटी बातें ये हैं।

> श्रीकृष्ण ने अपना सारा जीवन चैन की बांसुरी बजाते हुए नहीं बिता दिया। उन्होंने कसरतें कीं। नटखट खेल खेले। गौएं चराईं। कुश्तियां लड़ीं। गुरु की सेवा की। सुदामा को गले लगाया और पापियों को मार मिटाया। उस समय भारत में धुआंधार लड़ाई छिड़ी हुई थी। श्रीकृष्ण-जी बेजोड़ पहलवान थे। फिर भी उन्होंने हाथ में हथियार नहीं उठाया। वे लड़ाई के मैदान में घूमते हुए भी लड़ाई से अलग रहे। श्रीकृष्ण के सामने छोटे-बड़े, अमीर-गरीब बराबर थे।

श्रीकृष्ण का चाल-चलन इतना ऊंचा है कि जिसके पास जितनी ताकत है वह उतना ही उनसे सीख सकता है। इस पर्व पर श्रीकृष्ण से हम क्या मांगें ?

श्रीकृष्ण तो गुणों के भण्डार हैं। आओ, उनके जन्म-दिन पर हम उनसे यह वर मांगें :

हे गरीब-निवाज ! तुमने अर्जुन के दिल से माया-मोह को मिटाया था। हमारे दिल से भी नादानी को दूर करो ! हे दीनानाथ ! तुमने अर्जुन को सच्चा रूप दिखाया है। हमारे मन में भी तुम आकर बसो।

•

आज़ादी का त्योहार :

पन्द्रह अगस्त

भाइयो ! अब हम आज़ाद हैं। हमारा देश आज़ाद है। हमारा सिर दुनिया में ऊंचा है। मगर आज से दस साल पहले यह बात न थी। तब हम गर्व से सिर ऊंचा उठाकर दुनिया में न चल सकते थे। तब हमपर राज करने वाले हमारे अपने आदमी न थे। तब हमपर राज करनेवाले विदेशी अंगरेज़ थे। अंगरेज़ सात समुद्र पार से हमपर राज करने आते थे। वे डेढ़ सौ बरसों तक हमपर राज करते रहे।

अंगरेज़ों के राज में हम आज़ादी के लिए तरसते थे। हम आज़ाद होना चाहते थे। हम अपने देश को आज़ाद करना चाहते थे। हम अपना सिर ऊंचा उठाकर चलना चाहते थे। लेकिन विदेशी राजा हमारे देश को कुचल देते थे। 'भारतमाता की जय' पुकारना एक बड़ा अपराध था। आज़ादी की पुकार करने-वालों को जेलों में ठूंस दिया जाता था। अपना हक मांगनेवालों को मौत की सज़ा दे दी जाती थी।

फिर भी हम घबराए नहीं। हमने हिम्मत न हारी। हमने विदेशी अंगरेज़ों से लड़ने की ठानी। अंगरेज़ों के पास तोपें थीं; हमारे पास तप था। अंगरेज़ों के पास संगीनें थीं; हमारे पास सच था। अंगरेज़ों के पास सेना थी; हमारे पास शान्ति थी। हमने एक भी हथियार नहीं उठाया। एक बूंद भी लहू
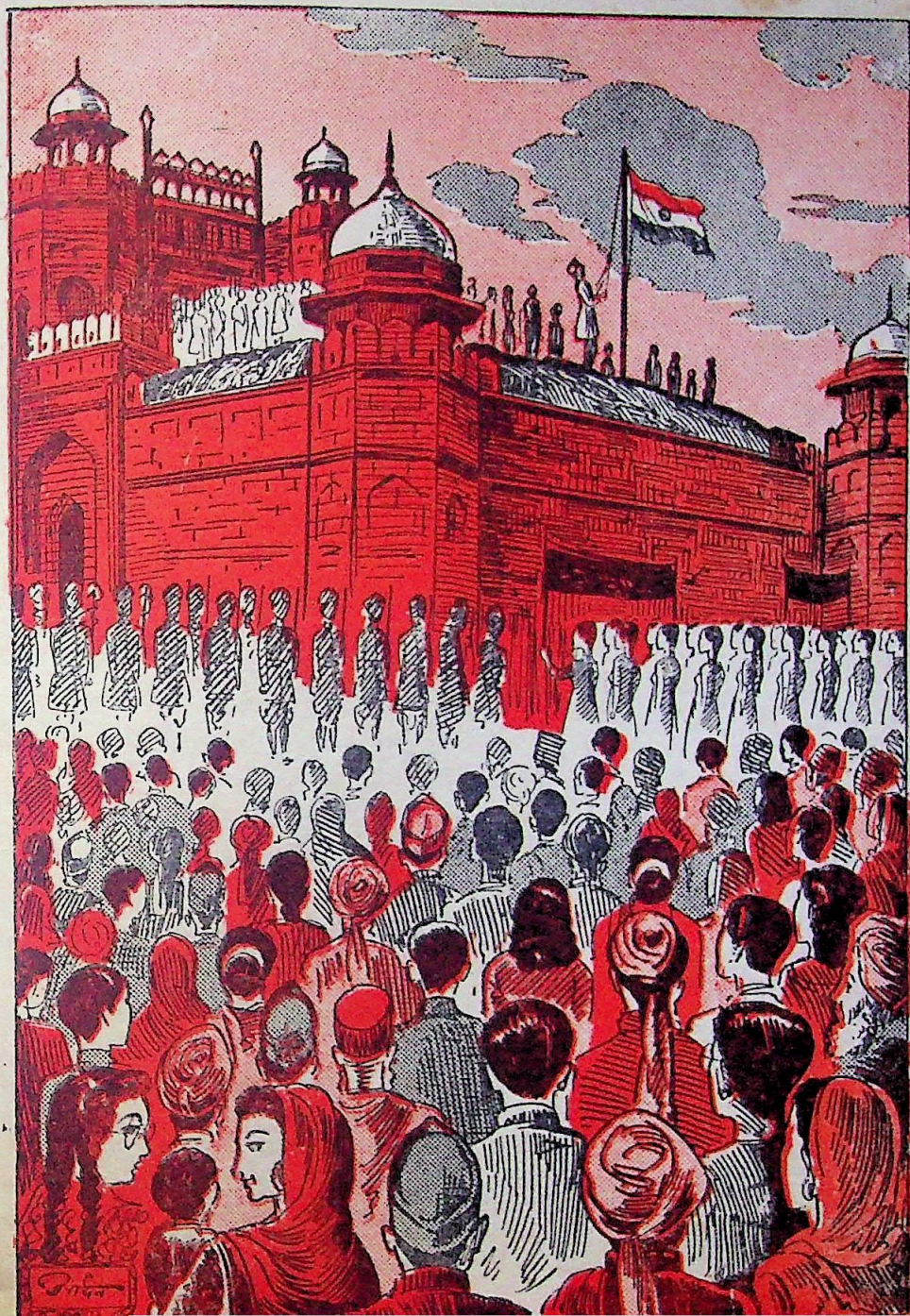
नहीं बहाया। हमने खूंखार विदेशियों से शांति की लड़ाई लड़ी। आखिर हमारी विजय हुई। सच की जीत हुई। भारतमाता की जय हुई। हम सबने ऊंची आवाज़ से पुकारा—भारतमाता की जय!

वह १५ अगस्त, १९४७ का दिन था। सचमुच वह बहुत बड़ा दिन था। उस दिन हमारे बंधन कटे थे। उस दिन हम आज़ाद हुए थे। हज़ारों बरसों की अधीनता के बाद हमें उस दिन अपना राज मिला था। अगर उस दिन भी हम खुश न होते तो और कब होते!

१५ अगस्त, १९४७ के दिन हमारे प्रधानमंत्री ने दिल्ली के लालकिले पर तिरंगा झंडा फहराया था। डेढ़ सौ वर्ष के बाद हमारा झंडा पहली बार अपनी शान से लहराया था। डेढ़ सौ साल के बाद हमने सिर ऊंचा उठाकर कहा था—हम आज़ाद हैं। उस दिन से हम आज़ाद चले आते हैं। उस दिन से आज़ाद देश के आज़ाद नागरिक हैं। उस दिन से हम पन्द्रह अगस्त का दिन हर साल मनाते हैं।

पन्द्रह अगस्त के दिन देश-भर में छुट्टी मनाई जाती है। उस दिन देश-भर में आज़ादी का दिन मनाया जाता है। उस दिन देश-भर में तिरंगे झंडे लहराए जाते हैं। उस दिन वीरों की याद मनाई जाती है जो आज़ादी की लड़ाई में काम आए थे।

पन्द्रह अगस्त के दिन हमारे प्रधानमंत्री लालकिले पर तिरंगा झण्डा लहराते हैं। पन्द्रह अगस्त के दिन हमारे प्रधानमंत्री हमें आज़ादी का सन्देश देते हैं; आज़ाद भारत के आज़ाद भारतीयों को पुकारकर कहते हैं:

> "देश-भाइयो! देश की आज़ादी पाकर हमने एक काम तो कर लिया; अब आगे का काम और करना है। हमने आज़ादी तो पा ली, लेकिन अगर हम अपनी आज़ादी को संभाल न सके तो वह हमारे पास टिक न सकेगी। कोई दूसरा आकर हमारा मालिक बन जाएगा। आओ, आज पंद्रह अगस्त के दिन हम प्रतिज्ञा करें कि हम आज़ादी पर हरगिज़ आंच न आने देंगे।"

अब हममें से हरएक राजा है। अब हममें से हरएक देश का नेता है। आओ, आज पन्द्रह अगस्त के दिन हम चवालीस करोड़ आवाज़ें मिलकर एकसाथ कह उठें :

चलो, दहाड़ मारकर बढ़े चलो, पहाड़ काटकर बढ़ें !
चलो, स्वदेश के लिए बढ़ें, न बढ़ सकें तो कट मरें ! !

•

विजय का त्योहार :

दशहरा

दशहरा देखने में एक त्योहार दिखाई देता है। लेकिन इस एक दशहरे में कई दशहरे मिले हुए हैं। जैसे गांव की नदी के किनारे पहले साल रेत की एक तह जमती है। दूसरे साल उसपर एक और तह जम जाती है। तीसरे साल तीसरी और चौथे साल चौथी। इस तरह तहों पर तहें जमती जाती हैं। जिस तरह कुछ बरसों के बाद उनकी जगह एक ऊंचा टीला दिखाई देने लगता है, उसी तरह एक दशहरे में भी अनेकों दशहरों की कहानियां छिपी हुई हैं। ये सब कहानियां बहादुरी और विजय की हैं। विजय का मतलब है जीत। इसलिए दशहरे का दूसरा नाम विजयादशमी भी है। यह असौज के महीने में नवरातो के दसवें दिन मनाया जाता है।

कहते हैं, एक बार राजा रघु ने सारी दुनिया को जीतकर जगत्‌जित नाम का एक यज्ञ रचा। उसने सारी धरती को जीतकर उसे दान में दे दिया। तांबे का एक पैसा भी अपने पास न रखा। जब वह सब कुछ दान में दे चुका तो किसी ऋषि का चेला रघु के दरबार में पहुंचा। चेले ने अपनी पढ़ाई खत्म कर ली थी। वह गुरु-दक्षिणा के रूप में अपने गुरु को चौदह करोड़ रुपये

भेंट करना चाहता था। किन्तु रघु के पास तो फूटी कौड़ी भी न बची थी। घर आए ऋषिकुमार को वह खाली हाथ लौटाना भी न चाहता था। इसलिए राजा रघु ने स्वर्ग पर चढ़ाई कर दी। रघु की विजय हुई। उसने विजय का सारा धन लाकर ऋषिकुमार के आगे रख दिया।

ऋषिकुमार बोला :

राजन्! इतना धन लेकर मैं क्या करूंगा! मुझे तो गुरु-दक्षिणा के लिए केवल चौदह करोड़ रुपये ही चाहिए। इससे अधिक एक कौड़ी भी मैं ग्रहण नहीं कर सकता।

रघु ने कहा :

लेकिन मैं तो यह सारा धन आपको देने का संकल्प कर चुका हूं। दान में दिए हुए धन में से एक कौड़ी भी मैं अपने पास नहीं रख सकता।

ऋषिकुमार चौदह करोड़ रुपये लेकर चला गया। रघु ने बचे हुए रुपये लेकर नगर से बाहर एक मैदान में पहुंचकर एक पेड़ पर से ये सब रुपये गरीबों और अपाहिजों में लुटा दिए।

राजा रघु की स्वर्ग पर विजय असौज की दशमी के दिन हुई थी। उसीकी याद में विजयदशमी का यह त्योहार चल पड़ा। आजकल भी दशहरे के दिन गांव के लोग गांव की हद को पार करके एक मैदान में जाते हैं। वहां वे शमी के पेड़ के पत्ते लूटते हैं। यह राजा रघु के बरसाए हुए रुपये लूटने की एक यादगार है।

समय बीतने पर राजा रघु के ही कुल में श्रीरामचन्द्रजी का जन्म हुआ। श्रीरामचन्द्रजी ने भी दशहरे के दिन ही रावण पर विजय पाई थी। इसलिए राम की विजय का सम्बन्ध भी दशहरे के साथ जुड़ गया। आजकल भी दशहरे के दिन सांझ को रावण, मेघनाद और कुम्भकर्ण के पुतले जलाए जाते हैं। वह राम की विजय की ही यादगार है।

दशहरे के दिन चौमासा लगभग खतम हो जाता है। बरसात के कारण जो-जो काम रुके रहते हैं, वे दशहरे के दिन फिर से शुरू किए जाते हैं। पुराने समय में राजा लोग शत्रुओं को जीतने के लिए चल पड़ते थे। व्यापारी लोग बैलगाड़ियां भरकर व्यापार के लिए निकल पड़ते थे। इसकी याद में आज भी सारे भारत में दशहरे के दिन बहादुरी के करतब दिखाए जाते हैं। ढाल, तलवार और भालों के खेल खेले जाते हैं।

इस तरह दशहरा सचमुच विजय का त्योहार है। अपने पुरखाओं की तरह आओ, हम भी दशहरा मनाएं। बाहरी दुश्मनों पर विजय पाने के साथ-साथ आओ, हम अपने दिल में बैठे हुए लोभ और अहंकार जैसे दुश्मनों पर भी विजय पाएं। शमी के पत्ते लूटने के बदले आओ, हम पुण्य के पत्ते लूटें। गांव की हद को लांघने के साथ-साथ आओ, विजयादशमी के दिन हम मिलकर एक कदम आगे बढ़ाना सीखें।

•

बापू का त्योहार :

गांधी-जयंती

कभी-कभी भगवान कुछ खास आत्माओं को इस दुनिया में भेजता है। वे आत्माएं खास होती हैं। जिस दिन वे दुनिया पर उतरती हैं, वे दिन भी खास बन जाते हैं। वे आत्माएं अमर होती हैं। उनके नाम से वे दिन भी अमर बन जाते हैं। ऐसा ही दिन २ अक्तूबर का भी है। उस दिन कलियुग के अवतार गांधीजी की आत्मा इस दुनिया में प्रकट हुई थी।

गांधीजी की आत्मा ने प्रकट होने के लिए हिन्दुस्तान की पवित्र भूमि को चुना। हिन्दुस्तान में काठियावाड़ नाम का एक प्रदेश है। इस प्रदेश में

पोरबन्दर नाम का एक छोटा-सा कस्बा है। पोरबन्दर की सुदामापुरी में ही २ अक्तूबर, सन् १८६९ के दिन गांधीजी का जन्म हुआ था।

गांधीजी के पिता का नाम कर्मचन्द गांधी था। उनकी माता का नाम पुतलीबाई था। कर्मचन्द गांधी की तीन संतानें पहले ही थीं, दो बेटे और एक बेटी। जब १८६९ में २ अक्तूबर के दिन उनके घर तीसरे पुत्र का जन्म हुआ, तो वे बड़े खुश हुए। यह नन्हे गांधी का पहला जन्म-दिन था। पांच जनों के छोटे-से परिवार ने इस जन्म-दिन को मनाया था। उन्हें क्या पता था कि आगे चलकर इसी दिन को भारत की छियालीस करोड़ जनता भी मनाया करेगी। माता-पिता ने नन्हे गांधी के जन्म पर वैसी ही खुशी मनाई जैसीकि सब बालकों के जन्म पर मनाई जाती है। उन्होंने नन्हे गांधी का नाम मोहनदास गांधी रखा।

यह नन्हा गांधी ही आगे चलकर बापू गांधी के नाम से मशहूर हुआ। बापू ने पहले अपनी कमज़ोरियों से मोर्चा लिया। उसके बाद बापू ने दूसरों की कमज़ोरियों को दूर करने का यतन किया।

बापू का कहना था—मैं मानुस की सेवा में ही भगवान के दर्शन पाता हूं। मैं जानता हूं कि भगवान स्वर्ग में नहीं, भगवान पाताल में नहीं, वरन् भगवान तो सबकी आतमा में समाया हुआ है।

बापू ने कलियुग में भी सतयुग की नींव डाली। उन्होंने लड़ाई और हथियारों पर से हमारा विश्वास हटाकर शांति और सच्चाई पर हमारा विश्वास बिठाया। उनका विश्वास था कि कठोर से कठोर मानुस के दिल को भी सत्याग्रह से बदला जा सकता है। गांधीजी ने सच्चाई के बल से अंगरेज़ों का दिल बदलकर दिखा दिया।

अब वे अमीरों और ज़मींदारों का दिल बदल रहे थे। वे किसानों और मज़दूरों को दुनिया में सिर ऊंचा करके चलना सिखा रहे थे। गोली से मारे जाने के एक दिन पहले बापू ने घोषणा की थी :

'देश का राजा किसान है।'

इसके बाद बापू हमारी आंखों से ओझल हो गए। २ अक्तूबर, सन् १८६९ में जो खास आत्मा इस धरती पर उतरी थी, वह अपना काम पूरा करके स्वर्ग को वापस चली गई। उनके नाम से यह दिन सदा के लिए अमर हो गया।

अब हर साल २ अक्तूबर के दिन बापू का त्योहार मनाया जाता है—गांधी-जयन्ती। गांव-गांव और नगर-नगर में प्रभात-फेरियां निकलती हैं। गली-गली और मुहल्ले-मुहल्ले में यह आवाज़ गूंज उठती है :

रघुपति राघव राजा राम,
पतित पावन सीता राम !

दिल्ली में यमुना के किनारे राजघाट पर बापू की यादगार बनी हुई है। राजघाट पर जाकर लोग बापू को याद करते हैं। लोग प्रार्थना करते हैं कि :

सबको सन्मति दे भगवान।

चाहे हम बापू जैसे महान नहीं बन सकते, फिर भी भगवान हमें ऐसी अक्ल दे कि हम सच्चे मानुस जरूर बनकर दिखा दें।

•

लक्ष्मी का त्योहार :

दीवाली

जिस दिन रात से अंधेरा निकल जाए, जब सिर से कर्ज़ा उतर जाए, जब दिल के पाप धुल जाएं, जब बस्ती से गंदगी और कंगाली निकल जाए और घर में लक्ष्मी का प्रवेश हो, भला उस दिन से बढ़कर और कौन-सा दिन भाग्यवान हो सकता है ! दीवाली एक ऐसा ही त्योहार है।

जिस तरह बरस-भर की चांदनी रातों में कार्तिक की पूनो की रात सबसे अधिक उजली होती है, उसी तरह बरस-भर की अंधियारी रातों में कार्तिक

की अमावस की रात सबसे अधिक काली होती है। लेकिन कार्तिक की अमावस अमावस नहीं रह जाती। वह दीवों की जगमग से पूनो की रात को मात कर देती है। इस अमावस ने एक ऐसा पुण्य किया है, जिसके बदले यह सब रातों की रानी बन गई है। इसी रात को दीवाली मनाई जाती है।

इस दिन श्री रामचन्द्रजी लंका को जीतकर घर वापस आए थे। राम की जुदाई में पूरे चौदह बरसों तक उनकी नगरी सूनी पड़ी रही थी। आज की रात को राम के लौट आने पर अयोध्या नगरी फिर से जगमगा उठी थी। घर-घर में बधाई बंटी थी। अटारी-अटारी पर दीवे जले थे और गांव-गांव में मिठाइयां उपहार में दी गई थीं। लोगों की खुशी की कोई सीमा न थी। मानो सूखे धानों में पानी आ गया हो।

लोगों में दीवाली को इतनी उमंग होती है कि कई दिन पहले से ही लोग इसकी बाट जोहने लगते हैं। गरीब से गरीब हिन्दुस्तानी भी अपने घर का कोना-कोना साफ कर लेता है। दीवारों पर सफेदी करवा लेता है। बाहर-भीतर लीपकर सुन्दर बना लेता है। घर का सारा सामान झाड़-पोंछ लेता है। हरएक यही कोशिश करता है कि उसीका घर सबसे सुन्दर हो। दीवाली के दिन उसीके घर सबसे अधिक रोशनी हो। रात-भर रोशनी रखना और जागते रहना सबसे अच्छा माना जाता है। कहावत है कि लक्ष्मी, उसीके घर आएगी जिसके घर रोशनी अधिक होगी और जो जागता रहेगा।

दीवाली से पहले बरसात के दिनों में बाहर-भीतर कीचड़ ही कीचड़ हो जाती है। बहुत बचाव करने पर भी नीची जगहों में मेह का पानी खड़ा हो जाता है। ऊपर-नीचे, आगे-पीछे गीलापन ही गीलापन हो जाता है। दलदल सड़ने लड़ती है। हवा बिगड़ने लगती है। मक्खियों और मच्छरों से लोग तंग आ जाते हैं। ऐसे समय में दीवाली आती है। बस्ती से गन्दगी को दूर भगाती है। कोने-कोने से कंगाली को निकालती है। वह घर-घर को इस लायक बनाती है

कि उसमें लक्ष्मी प्रवेश कर सके। अब दीवाली के दिन लक्ष्मी का प्रवेश होता है। कैसे ?

किसान के घर में वह अनाज के सुनहले दाने बनकर प्रवेश करती है। सावनी की फसल कट चुकी होती है। धान के कुठार भर जाते हैं। बाजरा खलिहान से आ रहा होता है। उड़द और मूंग पहले ही मटकों में भर दिए जाते हैं। आंगन में कपास और तिल के ढेर लग जाते हैं। खेतों से चलकर लक्ष्मी किसान के घर में पहुंच जाती है। किसान दीये जलाकर उसकी अगुआई करता है। उसके प्रसाद के रूप में वह नये अनाज की खीलें बांटता है।

व्यापारी लोग नये सिरे से अपना बहीखाता आरम्भ करते हैं। नये से नये माल से अपनी दूकान को भरपूर सजाते हैं। बज़ाज़ नये कपड़े लाते हैं। कुम्हार नये खिलौने बनाते हैं। हलवाई बढ़-बढ़कर मिठाइयां और पकवान बनाते हैं। नये बैल मोल लिए जाते हैं। नई गाड़ियां बनवाई जाती हैं। नये घोड़े मंगवाए जाते हैं। नये गहने बनवाए जाते हैं। नई से नई चीज़ों की मांग दीवाली के दिन होती है।

सांझ होते ही दीये तेल-बत्ती डालकर जगह-जगह जला दिए जाते हैं। हवन किए जाते हैं। मिठाई की महक से घर-आंगन भर जाते हैं।

लक्ष्मीदेवी घर-घर में झांकती है। घर-घर में प्रवेश करती है। वह केवल उस घर में नहीं जाती, जिसमें उसे दांव पर लगाया जा रहा हो। वह उस घर के द्वार से ही विदा हो जाती है। कार्तिक की जिस जगमगाती रात को सारी दुनिया दीवाली मनाती है, उसी रात को किन्हीं अभागों के घर का दीवाला निकल रहा होता है।

•

गणतंत्र दिवस : २६ जनवरी

प्रतिवर्ष २६ जनवरी को वैसे तो सारे भारत में गणतन्त्र-दिवस मनाया जाता है, किन्तु दिल्ली में, जोकि भारत की राजधानी है, विशेष सजधज के साथ यह राष्ट्रीय उत्सव मनाया जाता है। उस दिन सवेरे हमारे राष्ट्रपतिजी की सवारी निकलती है। इंडिया गेट के मैदान में जल, थल और नभ सेनाओं की टुकड़ियां और स्कूल के बच्चे उन्हें सलामी देते हैं। ये फौजी टुकड़ियां मार्च करती हुई लालकिले तक आती हैं। इनके साथ बख्तरबन्द गाड़ियां, छोटी-छोटी तोपें, टैंक और दूसरा फौजी सामान भी होता है। भिन्न-भिन्न प्रदेशों की सरकारों द्वारा जो झांकियां प्रस्तुत की जाती हैं, उनकी शोभा तो निराली ही होती है। भारत के सारे प्रदेशों के वासी कैसा पहनते-ओढ़ते हैं, नाचते-गाते हैं, उनका सामाजिक जीवन कैसा है—यह सब कुछ झांकियों में दिखाया जाता है।

इंडिया गेट से लेकर लालकिले तक सड़क के दोनों ओर परेड और झांकियों को देखने के लिए लाखों की संख्या में लोग खड़े होते हैं।

देश १५ अगस्त, १९४७ को स्वाधीन हुआ था, किन्तु २६ जनवरी का महत्त्व भी कम नहीं है। २६ जनवरी, १९५० को भारत में हमारा अपना बनाया कानून लागू हुआ था। तब से भारत सर्वशक्तिसम्पन्न लोकतन्त्र गणराज्य बना।

पर नया संविधान लागू करने के लिए यही दिन खास तौर पर क्यों चुना गया, इसकी भी एक कहानी है।

२६ जनवरी, १९५० से २० वर्ष पहले लाहौर कांग्रेस ने हमारे स्वर्गीय प्रधान मंत्री पं० जवाहरलाल नेहरूजी के सभापतित्व में एक प्रस्ताव पास किया था कि हम पूर्ण स्वराज्य लेकर रहेंगे। इसके बाद प्रतिवर्ष २६ जनवरी को सारा राष्ट्र अपने उस संकल्प को दोहराता रहा। इसलिए भारत को सर्वतन्त्र गणतन्त्र राज्य घोषित करने के लिए यह दिन चुना गया।

अब यह दिन हमारे लिए दो संदेश देता है : स्वाधीनता की रक्षा का और प्रजातन्त्र की रक्षा का। भगवान करे, हम दोनों की रक्षा में समर्थ बनें।

•

फूलों का त्योहार :

वसंत

कहते हैं कि पहले-पहल वसंत के दिनों में ही धरती पर मनुष्य का जन्म हुआ था। भगवान चाहता था कि धरती स्वर्ग से भी सुन्दर हो। मनुष्य उसे स्वर्ग से भी अधिक प्यार करे।

भगवान ने अपनी सारी सुन्दरता धरती पर बिखेर दी। इससे भी उसका जी न भरा। उसने फूलों के देवता वसंत को और सुन्दरता के देवता कामदेव को धरती पर भेजा। हरे पत्ते निकल आए। जमा हुआ रस बेल-बूटों में फिर से दौड़ने लगा। जाड़ों में उजड़ी दुनिया फिर से आबाद होने लगी।

इससे भी भगवान का जी न भरा। वह धरती को स्वर्ग से भी सुन्दर बनाना चाहता है। इसलिए भगवान खुद फूलों में फूल बनकर मुस्कराया। वह खुद डालियों पर कोंपल बनकर लहलहाया। वह खुद खेतों में सरसों बनकर लहराया।

अब भगवान को पूरा सन्तोष हुआ। अब धरती स्वर्ग से भी सुन्दर बन चुकी थी। अब मनुष्य का धरती पर अवतार हुआ। वह मनुष्य के अवतार का सुनहला दिन था। वही पहला वसन्त था।

तब से लेकर हर साल वसन्त धरती पर आता है। हर जाड़े में पुराने पत्ते उड़ जाते हैं। वसंत आकर फिर से पेड़ों पर नये अंकुर उगा देता है। हर जाड़े में पुरानापन उजड़ जाता है। वसंत आकर फिर से नई दुनिया आबाद कर देता है। पूरे दो महीने तक वसन्त की बहार रहती है—चैत और बैसाख।

लेकिन वसंत का असली आरम्भ तो माघ की किसी चांदनी रात को पहले ही हो जाता है। जब चांदनी का चांद नीले आकाश में मुस्करा रहा होता है, तभी वसन्त चुपचाप धरती पर उतर आता है। वह गांव-गांव में घूमता है। वह घर-घर में पहुंचता है। सुबह होती है। लोग मुस्कराते होंठों से वसन्त-पंचमी की अगवानी करते हैं।

वसन्त-पंचमी के दिन पहली बार पेड़ों का जमा रस फिर से दौरा करने लगता है। जाड़ों के बाद उस दिन पहली बार हमारी नसों में नया खून दौड़ने लगता है। उस दिन पहली बार खेतों में सरसों का एक पीला फूल खिलता है। उस दिन पहली बार मधुमक्खी अपने छत्ते में से निकलकर फूलों में से रस पीने को जाती है। उस दिन पहली बार दिन बढ़ने लगता है और रातें घटने लगती हैं। इस तरह जब सारी दुनिया में नया जीवन पैदा होने लगता है तो मनुष्य ही उदास क्यों बैठा रहे ? वह भी वसन्त क्यों न मनाए ? वह भी वसन्त के दिन एक नया कदम क्यों न बढ़ाए।

खेती के काम-काज से किसान निबट चुके हैं। बाहर न सरदी है न गरमी। जाड़ों में सिकुड़े-लिपटे रहकर जी ऊब चुका है। अब खुलकर अंगड़ाइयां लेने को जी चाहता है। मन गुदगुदाने लगता है। कुछ हंसने-मुस्कराने को जी करता है। गांव का किसान सबसे आगे बढ़कर वसन्त को गले लगाता है।

घर-घर में वसन्ती पगड़ियां रंगी जाने लगती हैं। घर-घर में वसंती हलवे की खुशबू महकने लगती है। घर-घर में बड़े बालक वसन्ती पतंगें उड़ा-उड़ाकर आकाश में हलचल पैदा कर देते हैं।

गांव के नौजवान मंदिरों में जाकर उस सुन्दर भगवान की पूजा करते हैं, जिसने इतना सुन्दर वसन्त बनाया है। देहातों की युवतियां पूजा का सामान लेकर सुन्दरता के देवता कामदेव की आरती उतारती हैं। छोटे-बड़े, बच्चे-बूढ़े सब मिलकर खेतों और अमराइयों में बहार को देखने जाते हैं। मेला भरता है।
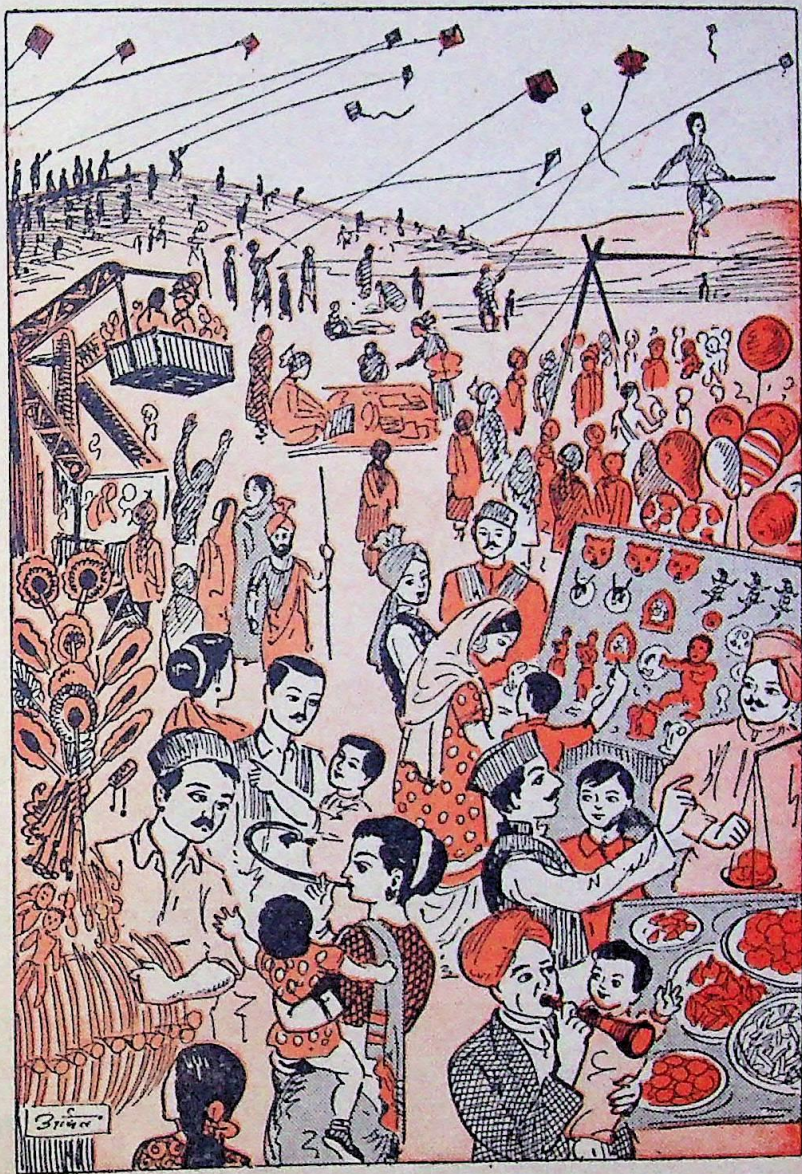
जिसे देखो वही खुश है। जिसे देखो वही मुस्करा रहा है।

ऐसा लगता है कि आज धरती पर कोई भी उदास नहीं। आज सचमुच धरती स्वर्ग बन गई है, आज सचमुच धरती के युवक-युवतियां स्वर्ग के देवी-देवता बन गए हैं। भगवान करे, वसन्त हमारे दिलों में बारहों मास बसा रहे!

●

जवानी का त्योहार :

होली

फागुन जवानी का महीना है। जिधर देखो उधर जवानी की ही बहार दिखाई देती है। खेत जवान, फसलें जवान, किसान की उम्मीदें जवान। गेहूं की बालें निकल आई हैं, जौ पकने को तैयार खड़े हैं। चनों में दाने पड़ चुके हैं। सरसों और अलसी में कुछ ही देर है। सब फसलें एकसाथ कटने को तैयार खड़ी हैं। किसीका घर अनाज के दानों से भर जाएगा। कुठारों के भाग जागेंगे। पशुओं के लिए नया चारा निकलेगा। इन्हीं उम्मीदों पर, लहराते खेतों को देखकर किसान का दिल खुशी से नाच उठता है।

नाचे भी क्यों ना? असाढ़ी की फसल ही तो उसका असली सहारा है। उसने असाढ़ से लेकर बरसात-भर खेतों में कड़ी जुताई की। बीज बोए, पानी दिया और पाल-पोसकर बड़ा किया। आज वे खेत सोना उगल रहे हैं। किसान की कड़ी मेहनत फल ला रही है। भला अब वह खुश क्यों न हों? नाचे क्यों न?

किसान एक नजर अपने लहलहाते खेतों की ओर डालता है और दूसरी दूर अपनी माटी की कुटिया पर। गुदगुदाते हृदय से वह पहली बार गेहूं की कुछ बालें और चनों की कुछ टहनियां तोड़ता है। असाढ़ी का यह पहला उपहार झोली में ले जाते हुए वह इतना खुश है कि मानो आकाश से तारे तोड़ लाया है

ग्रौर उनसे ग्रपने बाल-बच्चों ग्रौर पड़ोसियों की झोलियां भरने जा रहा है ।
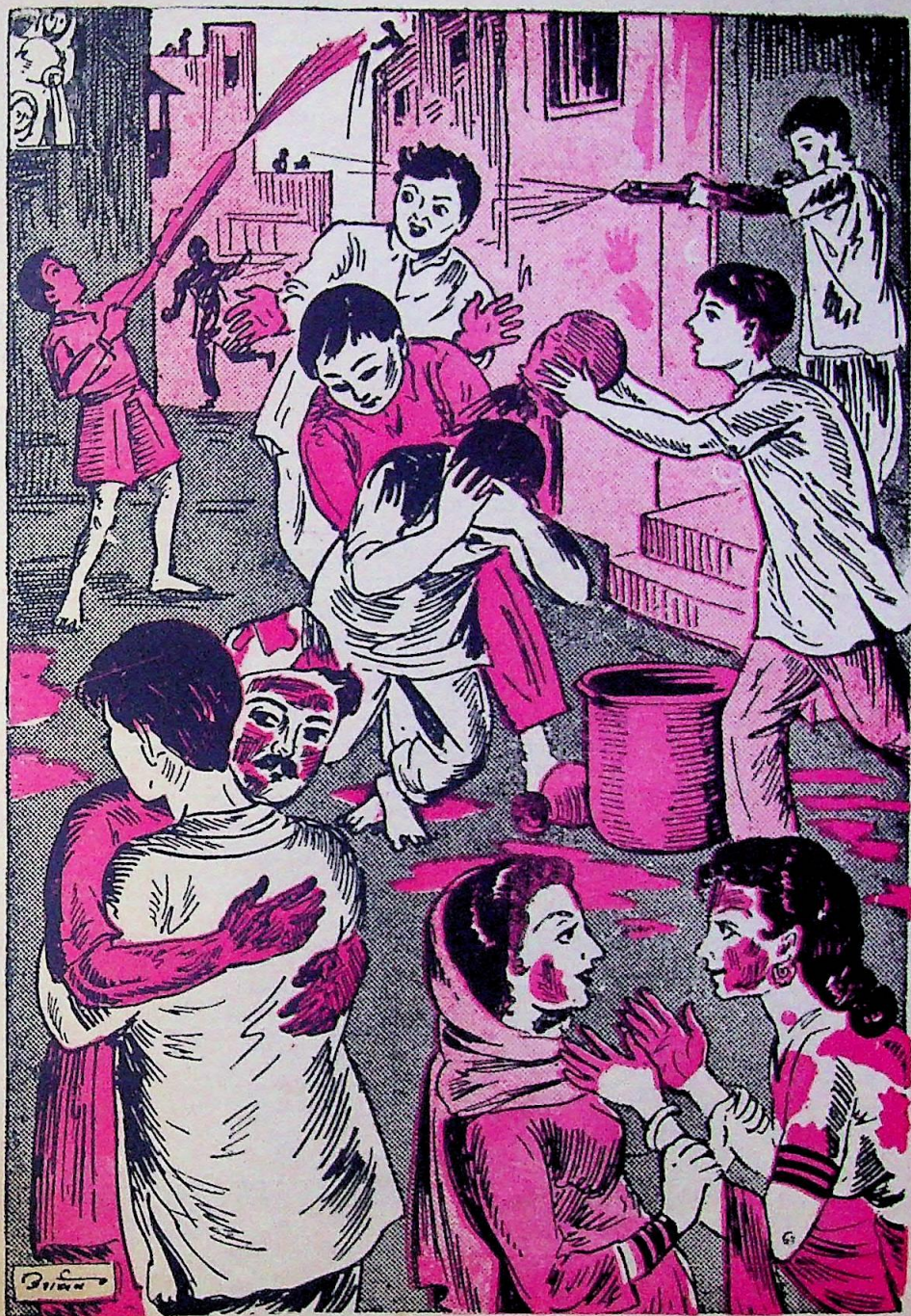
किसान ग्रपने ग्रांगन में ग्रलाव जलाता है । ग्रलाव में गेहूं ग्रौर चने की टहनियां साबुत ही डाल देता है । गांव-भर को होलां खाने का न्योता देता है । वह ग्रमीरों को बुलाता है, गरीबों को बुलाता है, मित्रों को बुलाता है, ग्रौर सारे गांव को बुलाता है । ग्राज उसका कोई दुश्मन नहीं है । साल-भर में किसीके साथ कुछ मनमुटाव हो भी गया तो ग्राज होलां के ग्रधभुने दानों में उसे भुला देना चाहता है । ग्राज वह सारे गांव के गले मिलकर होली खेलना चाहता है । इसी तरह घर-घर में ग्रौर गांव-गांव में होलां खिलाए जाते हैं ग्रौर होली मनाई जाती है ।

होली के दिन सब काम बन्द रहते हैं । लोग मंडलियां बनाकर घरों से बाहर निकल पड़ते हैं। बाहर उन्हें खेत-खेत में, पेड़-पेड़ पर फागुन खिलखिलाता हुग्रा नज़र ग्राता है । पात-पात पर फागुन नाचता हुग्रा दीख पड़ता है ।

सब टेसू के फूलों का रंग बनाकर हाथों में रख लेते हैं । युवक युवकों के माथे पर तिलक लगाते हैं । युवतियां युवतियों की मांग में रंग भरती हैं । बालक पिचकारियों में रंग भरकर ग्रापस में फाग खेलते हैं । थोड़ी देर के लिए बूढ़े भी जवान बन जाते हैं । जवान भी बालक बन जाते हैं ग्रौर फाग की खुशी में सब मिलकर एक हो जाते हैं । चारों तरफ खुशी ग्रौर खुशबू छा जाती है । गांव की छोहरियां बांहों में बांहें डालकर फाग गाने लगती हैं :

मत बैठो बसन्त निहारो रे ! उठ होली खेलो बनजारो रे !!

जवान दंगल खेलने लगते हैं । पहलवान ग्रखाड़े में कूद पड़ते हैं । नट ग्रौर गवैये नाटक खेलने ग्रौर रास रचाने लगते हैं । जो जैसे चाहता है वैसे ही ग्रपने मन की खुशी प्रकट करता है । इस तरह हंसते-खेलते, मिलते-मिलाते हुए, होलां खाए जाते हैं । नाचते-गाते हुए होली खेली जाती है। कहते हैं, ऐसी होली कृष्ण-कन्हैया ने भी खेली थी ।

लेकिन इधर कुछ गंवारों ने होली का हुल्लड़ बना दिया । शराब की

बोतलें पीकर नशे में अंधे हो गए। एक ने दूसरे पर कीचड़ डाला। दूसरे ने तीसरे के गले में जूतों का हार डाला। चौथे ने राह जाते भलेमानुस के मुंह पर कालिख पोत दी। एक ने गाली दी। दूसरे ने लाठी चलाई। सिर फट गए। लहू बह निकले। दोस्त दुश्मन बन गए।

उधर किसान लोग प्रेम की होली खेल रहे हैं। इधर गंवार लोगों में खून की होली खेली जा रही है। उधर परायों को भी गले लगाया जा रहा है। इधर अपनों को भी दुश्मन बनाया जा रहा है। उधर मीठे स्वर से फाग के गीत गाए जा रहे हैं। इधर एक-दूसरे पर गालियां बरसाई जा रही हैं। उधर कृष्ण और राम की सवारियां निकाली जा रही हैं। इधर एक आदमी का मुंह काला करके गधे पर उसका जुलूस निकाला जा रहा है। कहते हैं, ऐसे होली प्रह्लाद के पिता हरनाकुश ने खेली थी।

•

राम-जन्म का त्योहार :

रामनवमी

दुनिया में अनगिनत प्राणी आते हैं। हज़ारों राजा जन्म लेते हैं। अरबों आदमी पैदा होते हैं। वे कुछ दिन जीते हैं, कुछ दिन तक हंसते-खेलते हैं। फिर कुछ दिन बाद इस संसार से वापस चले जाते हैं। उन सबके यह संसार जन्म-दिन नहीं मनाता है और न कभी उन्हें याद करता है।

लेकिन धरती पर कुछ मानव ऐसे भी आते हैं जिन्हें लाखों बरसों तक दुनिया भुला नहीं पाती। ऐसे मानव लाखों में कुछेक होते हैं। दुनिया उन्हें याद करती है। आदर से उसका नाम लेती है। हर बरस उनके जन्म-दिन मनाती है। ऐसे मानव मानव नहीं होते। वे सचमुच अवतार बनकर आते हैं।

इन्हीं अवतारों में से एक श्रीराम हैं।

लाखों बरस पहले की बात है। लेकिन ऐसा लगता है कि वह कल की बात है। चैत का महीना था। चांदनी रातें थीं। नवमी का चांद आकाश पर मुस्करा रहा था। तभी दशरथ के घर धरती के चांद राम का उदय हुआ। तब चांद की नवमी थी। उस नवमी को राम का जन्म हुआ, इसलिए उस दिन अयोध्यावालों ने रामनवमी मनाई। घर-घर में जनता ने खुशियां मनाईं। नगर-नगर में लोगों ने उत्सव मनाया और गांव-गांव में किसानों ने त्योहार मनाया।

तब से लेकर आज तक हर बरस खुशियां मनाई जाती हैं। हर बरस त्योहार मनाया जाता है। और हर बरस रामनवमी मनाई जाती है।

रामनवमी के दिन नगरों और गांवों में राम के स्वांग बनाए जाते हैं। बाज़ार में एक जुलूस निकाला जाता है। जुलूस के आगे-आगे बाजा, बाजे के पीछे झंडे। झंडों के पीछे गानेवाले। गानेवालों के पीछे बैलगाड़ियां और बैलगाड़ियों पर राम के जीवन की झांकियां होती हैं। कहीं राम और सीता। कहीं राम और शबरी। कहीं राम और परशुराम। कहीं राम और हनुमान। और कहीं राम और रावण दिखाए जाते हैं। लोग दिन में रामनवमी का व्रत या उपवास रखते हैं। रात को जाग-जागकर राम की कथा सुनते हैं।

राम का जन्म त्रेतायुग में हुआ था। राजा दशरथ को बेटा मिला था। रानी कौशल्या की सूनी गोद हरी-भरी हो गई थी। अयोध्यावालों को इन्द्र से भी बलवान राजा मिला था। शबरी को भगवान से भी बड़े राम के दर्शन हुए थे। राक्षस मारे गए थे। पापों का नाश हुआ और भारत में रामराज कायम हुआ था।

रामनवमी का त्योहार मनाने से वास्तविक लाभ तो तभी होगा जब हम भगवान राम की तरह आदर्श पुत्र, आदर्श भाई, आदर्श पति और फिर आदर्श प्रजासेवक बनें। तभी से सच्चा रामराज होगा।

OOO

सरल, रोचक और उपयोगी पुस्तकें

हिन्दुस्तान हमारा	धर्मपाल शास्त्री	२·००
हम एक हैं	धर्मपाल शास्त्री	१·५०
नया समाज	लक्ष्मीनारायण शर्मा	१·००
अच्छी आदतें	आचार्य चतुरसेन	१·००
आदमी	मोहम्मद खलीक	१·००
चिड़ियाघर	प्रकाश पंडित	१·००
आओ सरकस देखें	प्रकाश पंडित	१·००
अशोक चक्र	माईदयाल जैन	०·७५
अच्छे बनो	प्राणनाथ वानप्रस्थी	०·७५
गांधीजी से क्या सीखें	विश्वनाथ	१·००
बापू से सीखो	विश्वनाथ	०·७५
आओ सीखें	केशव सागर	१·००
आओ देखें	रामचन्द्र तिवारी	१·००
सीखने की बातें	केशव सागर	१·००

राजपाल एण्ड सन्ज़, दिल्ली

द्वारा प्रकाशित